Kautilya Concept of Kingship

कौटिल्य अपने अर्थशास्त्र में राजतंत्रीय शासन व्यवस्था को सर्वोच्च स्थान प्रदान करता है। कौटिल्य के अनुसार शासन की सफलता राजा की शक्ति और योग्यता पर निर्भर करता है। श्री वी०पी० सिन्हा के अनुसार "यह स्पष्ट है कि कौटिल्य की शासन प्रणाली में राजा शासन तंत्र की धुरी है, और शासन के संचालन में सक्रिय रूप से भाग लेने तथा शासन को गति प्रदान करने का कार्य करता है। स्वयं कौटिल्य ने कहा था कि "यदि राजा सम्पन्न हो तो उसकी समृद्धि में प्रजा भी सम्पन्न होती है, राजा का जो शील हो वही शील प्रजा का भी होता है। यदि राजा उद्यमी और उत्थानशील हो तो प्रजा में भी गुण आ जाते हैं, यदि राजा प्रमादी हो तो प्रजा भी वैसी ही हो जाती है। अतः राज्य में केन्द्रभूत राजा ही है"।

राजा के लिए आवश्यक गुण :— कौटिल्य ने राजा की कल्पना एक आदर्श व्यक्ति के रूप में की है, वह राजा को राजर्षि (King Philosopher) मानता है, जो Plato के दार्शनिक शासक से कम नहीं है। कौटिल्य के अनुसार राजा में निम्नलिखित गुण आवश्यक है, "वह ऊँचे कुल का हो उसमें दैवि बुद्धि और शक्ति हो, वह वृद्धजनों की बात सुनने वाला हो, धार्मिक हो, सत्य भाषण करने वाला हो परस्पर विरोधी बाते न करे, कृतज्ञ हो, उसका लक्ष्य बहुत ऊँचा हो, उसमें उत्साह अधिक हो, सामन्त राजाओं को अपने वश में करने में वह समर्थ हो, उसकी परिषद छोटी न हो वह और वह नियंत्रण का पालन करने वाला हो"।

राजा की शिक्षा :— कौटिल्य के अनुसार शिक्षा के द्वारा राजा उपर्युक्त गुणों की प्राप्ति कर सकता है। अतः राजा के लिए शिक्षा आवश्यक है "कौटिल्य के शब्दों में जिस प्रकार घुन लगी लकड़ी शीघ्र नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार जिस राजकुल के राजा शिक्षित नहीं होते वह राज कुल बिना युद्ध आदि के स्वयं ही नष्ट हो जाता है"। कौटिल्य इस तथ्य से भी परिचित है कि सभी

गुणों से युक्त राजा सरलता से नहीं मिल सकता है। उसके अनुसार इनमें से कुछ गुण स्वाभाविक होते हैं और कुछ अभ्यास से प्राप्त किए जा सकते हैं, मनुष्य के स्वभाव और चरित्र पर वंश परम्परा का प्रभाव होता है किन्तु अभ्यास से उसमें कुछ परिवर्तन संभव हो सकता है, अभ्यास से प्राप्त गुण अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। इस संबंध में कौटिल्य की विचार धारा प्लेटो के समान है

राजा की दिन-चर्या :— राजा अपने न्यायोचित कर्तव्यों का पालन करे इस दृष्टि से कौटिल्य ने राजा की दिनचर्या निर्धारित की है। रात और दिन में उसके सारे समय का पूरा कार्यक्रम कौटिल्य ने दिया है, इसमें इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि उसका एक-एक क्षण जनकार्य में लगा हो, भोग-विलास के लिए कोई समय नहीं है। रात्रि में सोने के लिए केवल चार घण्टे की ही व्यवस्था की गयी है। इस प्रकार कौटिल्य के राजा का जीवन एक तपस्वी के समान होना चाहिए।

राजा के कर्तव्य :— कौटिल्य के अनुसार राजा के निम्नलिखित कर्तव्य हैं।

1. **प्रजा का कल्याण :—** कौटिल्य के अनुसार राजा का प्रथम कर्तव्य प्रजा का कल्याण करना है। कौटिल्य के शब्दों में "प्रजा के सुख में राजा का सुख और प्रजा के हित में राजा का हित है।" राजा के लिए प्रजा के सुख से भिन्न अपना कोई सुख नहीं है प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है।

2. **वर्णाश्रम धर्म को बनाये रखना :—** कौटिल्य का मत है कि अपने धर्म का पालन करने से स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति होती है। अतः राजा का कर्तव्य है कि वह प्रजा को धर्म के मार्ग से भटकने न दें। इसके साथ ही पवित्र आर्य मर्यादा में अवस्थित, वर्णाश्रम धर्म में नियमित और धर्म से रक्षित प्रजा सदा सुखी रहती है।

3. **नियुक्ति संबंधी कार्य :—** राजा प्रशासन का प्रधान होता है। वह अमात्य सेनापति और प्रमुख कर्मचारियों की नियुक्ति करता है। इसके साथ कर्मचारियों के कार्यों का निरीक्षण एवं उनकी पदोन्नति करता है।